मुद्रित पृष्ठों की संख्या : 3

# MHD-23

## हिन्दी में स्नातकोत्तर उपाधि ( एम. ए. हिन्दी )

## ( एम. एच. डी. )

## सत्रांत परीक्षा

## जून, 2022

### एम.एच.डी.-23 : मध्यकालीन कविता—1

*समय : 2 घण्टे* *अधिकतम अंक : 50*

---

***नोट : प्रथम** प्रश्न अनिवार्य है। शेष में से किन्हीं **तीन** प्रश्नों के उत्तर दीजिए।*

---

1. निम्नलिखित पद्यांशों में से किन्हीं **दो** की सन्दर्भ सहित व्याख्या कीजिए : 2×10=20

(क) पेट कहौं सुन बउचक राजा। ऐपन सान कोंपर साजा॥

पूरन खाँड सपूरन बोरे। जहवाँ दीसहिं तहबाँ गोरे॥

जानु सुहारी घिरत पकाये। देखत पान फूल पतराये॥

नाभी कुण्ड जो डुबखी परो। देखतहिं बूढ़ न पावइ तीरो॥

जाँनों अन्त पेट महँ नाही। अँतर क चाँद दीस परछाँहीं॥

अति अवगाह बोल अस बाजिर, तामँहि सूझि न तीर।

सुनके राउ दौर घस लिये, बूढ़ न पावइ तीर॥

(ख) दीन दु:खी के हेत जउ, बारै अपने प्रान।

रैदास उह नर सूर कौ, साँचा छत्री जान॥

(ग) मैया मोहिं दाऊ बहुत खिझायौ।

मोसौं कहत मोल कौ लीन्हौं, तू जसुमति कब जायौ।

कहा करौं इति रिस के मारैं खेलन हौं नहिं जात।

पुनि-पुनि कहत कोन है माता, को है तेरौ तात।

गोरे नंद, जसोदा गोरी, तू कत स्यामल गात।

चुटकी दै-दै ग्वाल नचावत, हँसत सबै मुसकात।

तू मोहीं कौं मारन सीखी, दाउहिं कबहुँ न खीझै।

(घ) प्रान वही जु रहैं रिझि वापर रूप वही लिहिं वाहि रिझायो।

सीस वही जिन वे परसे पद अंक वही जिन वा परसायो॥

दूध वही जु दुहायो री वाही दही सु सही जो वही ढरकायो।

और कहाँ लौं कहौं रसखानि री भाव वही जु वही मनभायो॥

2. संतकाव्यधारा के प्रमुख पारिभाषिक शब्दों का परिचय दीजिए। 10

3. 'चंदायन' की प्रेम-पद्धति पर विचार कीजिए। 10

4. रविदास की भक्ति के विविध आयामों की चर्चा कीजिए। 10

5. कृष्ण काव्य परंपरा का परिचय दीजिए। 10

6. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** पर टिप्पणियाँ लिखिए : $2 \times 5 = 10$

(क) रसखान का साहित्य

(ख) सूरदास के काव्य में वात्सल्य

(ग) सहज-शून्य

(घ) रविदास के काव्य में सामाजिक समरसता।